



विदेह (दिनांक 01 मार्च, 2008)





संपादकीय

वर्ष: 1 मास: 3

अंक: 5

पिछुना पक्षमे हम दबलंगा गेन छनहूँ, अपन भतीजीक
रिवाहमे । ओतय मिथिना बिसर्च गंस्टीठ्ठुं आ संस्कृत
रिश्वरिद्यालयक भ्रमण कएनहूँ । सरशी भिमानाथ ना,
मैथिलीपत्र प्रदीप, बघुरीब मोची(अध्यक्ष, मैथिली अकादमी),
रिश्वनाथ ना(प्रतिफलपति का. सि. दबलंगा संस्कृत
रिश्वरिद्यालय), देरनाबायण यादर(अध्यक्ष, मिथिना बिसर्च
गंस्टीठ्ठुं) लोकनिक दर्शनक सुखरसब प्राप्तु भेन । हेब
रिदेश्वेवस्थानसँ आँगा गौरीशंकर स्थान(हँठी रानी) गेनहूँ,
आ ओतय पानरंशिक मूर्ति आ ओहि पब मिथिनाक्षबमे
निखन अन्तिनेखक चित्र खिचनहूँ(होठे मिथिनाक खोज
सुंभमे देखु) । अ मूर्ति भरा अछि, आ 1500 वर्ष पूर
मिथिनाक्षबक प्रभुता देखरैत अछि । एहि पब शोध लेख
आँगाक कोनो अंकमे देन जायत । मिथिनाक गतिहासमे



एहि सुनकेँ खागसँ पहिने स्थान नहि देन जा' सकन छन, खा' ग्रहो तथा खडि जे गतिहासक रिद्वान श्री डी.एन. ना खरी गामक छथि, ओना हठी रानी हमब मामा गाम सेहो छी । हम गेन तँ बही खपन भतीजी डाँ स्त्रीठी ठाहब खा' श्री प्रदीप ह्माव ना, भा.प्र.से. केव रिवाहमे ह्दा रेशी कान खपन स्त्रार्थमे गाम-गाम घुमेत बहनहूँ, सबिसरक खयाची मिश्रक घवारी(सरा कड्डी) देखन, नागेन्द्र ह्मब जीक समबहानी(स्वतंत्रतासँ पहिने प्रकाशित) डुपब कएन, किछ मिथिनाम्बरक पांडुनिपिक गमेज नेनहूँ, मिथिनाक बनेक पौतीकेँ समृद्ध कवरौक हेतु सेहो हबे बास चित्रक संग्रह कएनहूँ खा' दिल्ली दू गोठ कितारक रौमक संग खएनहूँ । श्री रिभूति खानन्द खा' श्री धीरेन्द्र ना जीसँ भैँटक खरसब एहि छनि मानिमे हाथसँ निकनि गेन । नेपानक मैथिलीक रिद्वान लोकनिसँ संपर्क निबंतब होय तकब प्रयास सेहो शक कएनहूँ । जनकपुरमे तीनठा मैथिली एफ.एम. खडि खा, एकठाक निर्देशन श्री महेंद्र मंगियाजी कए बहन छथि ।



अपनेक बचनक खाँ प्रतिक्षियाक प्रतीक्षामे ।

नङ्ग दिल्ली 01/03/08

गजनेन्द्र ठाकूर

रिदेह 01 मार्च 2008

वर्ष 1 मास 3 अंक 5

एहि अंकमे अछि:-

1. शोध लेख:

मायानन्द मिश्रक गतिहास रौध (खाँगा)

2. उपन्यास

सहस्ररौढ़नि (खाँगा)

3. महाकार्य

महाभावत (खाँगा)



4. कथा

थार्या

5. पद्य

-ज्याति ना चोधरी 

-खन्याय करिता

6. संस्कृत शिक्षा

(थाँगा)

7. मिथिना कना- चित्रकना

(थाँगा)



चित्रकार उमेशि ह्रमाव महतो

8. संगीत शिक्षा



9. रौनारुा ढुते

10. पंजी शुरंध

(खुँगा)

- नेखक- रिद्युनंद नुा पङ्गीकलव

11. मिथिनुा खुा संसुकृत

12. डलषल खुा शुरीद्युगिकी

13. वकनुा निखरुसँ पहिने... (खुँगा)

14. शुरलसुी डैथिन Engl i sh डै



1. शोध लेख:

मायानन्द मिश्रक गतिहास रौध (खाँगा)

गणेश- ग्रा अथाय 4000 र्ष पूरुसँ शुक हागत अछि ।
स्त्री-पुरुष संरंध आ' पितृ हनक आबंभक चर्चा शुक
भेन । नून अनरौक आ' खेरौक प्रावंभ भेन । नून
अनरौसँ हनक नाम नानी पड़न । जर आ' गहूमक
खेतीक प्रावंभाथ' दूध दूहरौक आबंभ देखाउन गेन
अछि । हाथीक पाननक प्रावंभाथ' अदन-रँदनीसँ रिनिमयक



प्रावंत सेहो शुक भेन । शिसु देर पव जन था पात
चरुँक प्रावंत सेहो भेन । यरकेँ कूठरँ था रूकनी
कवरँक प्रावंत भेन । गद्धमकेँ चूवरँ था पानिमे भिजा
कय थागिमे पकायरँ प्रावंत भेन । पम्फिपानन कवयरँना
एकठा भिल्ल दन छन । मृतक-संस्कार था मू पव कनरँक
प्रावंत सेहो भेन । निपिक प्रावंत सेहो भेन ।

हव- एहि अध्यायक प्रावंत 3500 ङ.पू. देखायन गेन
अछि । नूनक रूपाव था स्वगढ नारक निर्माण प्रावंत
भेन । पौनीक कम्पना नपरँक हेतु भेन । हव-था
रँवदक सम्विनन प्रावंत भेन । गनाव खूनरँक प्रावंत था
जनक नरँरतक अतिविङ्ग चौरँ गमे रँसरँक प्रावंत सेहो
भेन । घव रँनएरँक प्रावंत सेहो भेन । कावी, गोव था
ताम्ररँगी कायाक रँवा-रँवी आगमन होगत बहन ।



2. Ūpnāsa

सहस्ररौद्रेनि

दोसब सान खेब रैह मीठिंग, दूनू गामक स्कूनक मध्य, झुदा
एहि रैब दोसब गाम रैना ठीम बस्तु रैदनि नेनक ।



मावि रँमरँ गाममे एकठा परक जेकाँ छन । दूगस्थानमे चाँकनेठक रूंगयाम हूँठरँ, खाँ कोनो कठघवा किंरा ठाँठक खूँष्टा उँखाँडाँ कय मावि-पीँठ शुक भय जागत छन । खाँ रौदक जे गप्प होगत छन से मनोबँजक । एक रँव एकठा खधरयसू एक गोँठ नर-नौताबकेँ दू-चावि चमेठा मावि देनहि । रौदक घँठनाक हेतु हम कान पथने बही तँ हमब पितियोत ओहि गोँथाँकेँ प्छनखिन्ह जे रँह रौत बहय ने । सभ कया एकमत बहथि जे रँह रौत बहय । एहि रँव हम हावि कय प्छनियहि, जे रँह कोन रौतखँछि जे सभकेँ रँमन खँछि, झुदा हमबा नहि रँमन खँछि । ओ' कहनहि जे एहि हरा पब रँचियाक घँठकेँतीक हेतु ओ' खधरयसू गेन बहथि, झुदा कथा नहि सुतबनहि । ओहि हरकक रिराह दोसब ठाम भय गेनहि, से तकरे केँन न' कय कोनो हूसियाहीक नाथ नय खाँग ओकवा हूँठनहि खँछि । हम प्छनियहि जे जेँ रिराह भ' जागत तँ सम्भव जमायक संरँध बँहत । तखन एहि हूसियाही गप प मावि रँजरेत । सभ कहथि जे खहाँ तँ तेसरे गप पब चनि गेनहँ ।



बातिमे नाटक देखेत अकाशमे उडी-तवाजू देखर, खानी उडी छैक तँ तवाजू कियेक कहत छियेक ? हेब ओहि नाटकमे अनगोँथा सँ मावि रनेरौक हमब संगीक एकठा चानि । तेन ग्रा जे नाटक केखय कान ओ' एकठा अनगोँथाकेँ थोँमा बहन छनाह । मावि अँठ-शँठ रकैत छनाह । आ' ओ' किछु राजय तँ कहत छनाह जे अखने नरेण तेयाकेँ रजायर । ताहि पब ओ' कहनहि जे जाओ अहाँक नरेण तेयाक डब हमबा नहि अछि । आरँ आगू स्रनू । हमब मित्र अनायासहि जोबसँ कानय नगनाह, दहो-रहो नोब निकनि गेनहि । लोकवि पाइत नरेण नग पहुँचनाह जे एकठा अनगोँथा मावनक अछि, आ' कहत अछि जे के नरेण ओकब हमबा कोनो डब नहि अछि आबो अँठ-शँठ । आरँ नरेण तेया पहुँचनाह जे रँता के छी । जखने ठाँच ओहि र्यजि पब देनहि, रँजनाह, भजाव यो । अहाँ छी । जकब एही छेड़क गती छी । अनका रिष्यमे कहत तँ पतिया जयतहँ । झुदा अहाँक रिष्यमे । आ' ग्रहो नहि जे तमसयनाह अछि, रबन् ग्रा जे मावनहि अछि । आ' नेप की चूखा बहन छन



जेना कतेक मावि पडून होय । हमबा सँ पृढनहि जे
भाव किछु एकबा करौ कएनहि, तँ हम कहनियन्हि जे
नहि । एहि पब हमब मित्रक नोब जतयसँ थायन छनहि,
ततहि चनि गेनहि । हज्जमति मूबि न्का कय स्वनन्हि
था नरेण भागक गेना पब सभकेँ कहनहि, जे ग्रा नरेण
काकाक संगी छथिन्ह, का हिनका किछु कहथिन्ह तँ रैजाय
भ' जायत । था अस्त्रिबसँ कहनथि जे रँचि गेन थाग
ग्रा ।

(खन्नरतते)



3. महाकार्य

महाभावत (खाँगा) -----

2.सभा पर

मय दानर छन कय बहन नर निर्माण,
सभा भरनक दिन-बाति नागि उँथोन ।
स्फुटिकसँ हाऊ शीसमहन मन कौशिन,
हाधिप्रिब ओतहि तखन सिंहासन रैसन ।
धृषि नाबदक खागमन भेन ओतय जाय,
देनहि कबरौक यत्र जे बाजसूय कहाय ।

रँजाउन द्वाबकासँ प्रुष्टकेँ समाद पठाय,
प्रुष्ट कहनहि सभा भरनमे खारि कय,
जवासंध मगधक नरेशि बहत गय यारत ।

बाजसूय सहन नहि होमय देत तारत ।
रँदी रँनेनक बाजा लोकनिकेँ ओ'हवाय,



थाक्रमण ओकव भेन मथुवा पव रँडु ,
हावि द्वावका बाजधानी रँनाओन जाय ।
हाधिष्ठिव रात सुनेत भेनथि हतास मन,
भीम अर्जून थाशा रँरूनन्हि भ्राता सुन ।
म्फत्रिय-धर्म अछि शत्रुके रशमे कवय,
शुक्र, अर्जून-भीम संग बाजगृह चनन ।
ब्राह्मण रेशेधावी बाजगीवक प्राचीव नाँघि,
पहँचन मभ सोमे मभा-भरन जी-जाँति ।
सकोव कवय चाहनक जवामंध रूमि रिप्र,
ननकावा देनक किंतु भीम द्रंद-हाहक शीघ ।
दिन रीतन थमेक नाम नहि नेछु ङ हाह,
शुक्रक संकेत पारि चीवन ओ'शिवीव संधिसँ,
भीम तोड़न शिवीव जवामंधक उँनष्टि हृतिँसँ,
शिवीव हेँकन दूह दिशि उँनष्टि एम्हव-ओम्हव,
म्फु कएन कावागावसँ रँदी गण बाजा मभकेँ ।



जवासंध-पत्र सहदेरकेँ दय मगध बाजक गद्दी,
खापस भेनाह गंद्रप्रसू घुवनाह तीनु र्यकित्तु ।
पूर दिशि भीम उतव खर्जून नहन दक्षिण ,
सहदेर पश्चिम दिशा दिशि दिग्भिजय खातिव ।
रिजय बथ नहि का रोकि सकन हुनकव,
धन-धान्यसँ पविपूर्ण सभ खाँरि कएन तैयाबी,
बाजसूय यत्रक भेन बाजा सभक प्रसूमे रँजाही ।
बाजा नोकनि केँ दय समूचित कार्यक भाव,
भीष्म-द्राणकेँ यत्र-निरीक्षणक देन प्रभाव ।
ग्रह रिप्र चवण-धोरौक नेनहि काज ।
हस्तुनापुवसँ भीष्म, द्राणक संग भेन आगमन,
धृतवाष्ट्र रिद्व ग्रप अश्विथोमा दुर्योधन दुःशासन ।

(खन्नरतते)



4. कथा

5. थार्या

रिराहक ँपवानु ढवी-ढ ाकी नोक हभवामँ ढैँठ कवरौक हेतु सानुवमे थारि वहन हुनाह । ताहिमे हुनि ँकठा नरम् कम्फाक हुत्रा थार्या थ' ँकव पितामही थ' माथ । ँ' माथक संग नहि थारि थसगरे थायन हुनीह । थूर कारी, दूरव-पातव, थारथकतासँ रेशी थनुशामित थ' शिथु थ' नापि-जोथि कथ रँजनिहावि । हभवामँ सभ गपमे ँनठा । हभव कनियाँ हुनकासँ हभव पविचय कवउनहि, थ' ँकव प्रशिसा सेहो कउनहि । किहु कानक रौद जखन ँकव पितामही थ' माथ हभवामँ ढैँठ कवरौक हेतु थयनीह तँ हभवा थनुभर भेन, जे हुनकव पितामहीक तँ नेहाज बाखन गेन हुन हुदा हुनकव माथक थरहेनना सन हभव कनियाँ थ' सानु द्वावा भेन हुन । गप्पा कवरौमे



ओ' नीक छनीह खा' जागत-जागत कहि गेनीह, जे हमबा मभ अहाँक मसुबक किबायादाव छी, खा' उपवका महना पव बहत छी । से भीड़-भाड़ कम भेना पव अरथे आहुँ । ओ गप्प जागत-जागत हमब मासु प्रायः सुनि नेनहि, से हमब पनोकेँ अस्थिबेसँ झुदा आत्रार्थिक कर्पे कहनहि, जे उपव जयरौक कोनो जकबी नहि छैक । हम पनोसँ पृच्छनिहनि, जे रौचारी एतेक आग्रहसँ रँजओनहि अछि । पनो कहनथि जे सुननियेक नहि, माँ मना कएनहि अछि । कावण पृच्छना पव गप अन्ठा देनहि ।

किछु दिनुका रौदक घटना छी, अन्हरोखेमे गेठक नमार्जा कय खुजरौक अरौज भेन । नागन जे क्या पीरि कय रँडरँड । बहन अछि । हमबा अतिबिऊ क्या ओहि अरौज पव ध्यान नहि देनक, खा' अन्ठयरौक झुंग कएनहि । हम रौहब अएनहुँ तँ एकठा अधरयसु नुमेत अरौत दृष्टिगोचर भेनाह । हमबा देखि डोनेत हाथसँ जमायरौरु कहि नमस्कार कएनहि । अखन धरि हमबामँ भैँठ नहि होयरौक कावण हमब पनोकेँ हर्जा छुओनहि खा' डोनेत उपव



मीठ कि दिशेसँ चलि गेनाह । हमब पनो हाथ पकड़ि कय हमबा भीतब खानि नेनहि खा' ग्रहो सूचना देनहि जे ग्रह खायकि पिता थीक । खनायासहि हमबा माथमे आयन जे बंग जे खायकि छेक से पिते पब गेन छेक । रौदमे हमब मासु उंपब जा' कय भाषण दए खयनीह खा' एक महिनाक भीतब घब छोड़रौक खलैमेठम सेहो खायकि परिवारकेँ दए देनहि । हमब सब कहनथि जे ग्र दसम खलैमेठम छेक, झुदा हमब मासु खडिग छनीह जे किछु भय जाय एहि रैब ओ' नहि मानतीह । जमाय की बुनताह जे केहन भाड़ दाब बखने छी । पहिने ठकिया-हूसिया कय रँहठारि नैत छन । पछना पब पता चनन जे खायकि पिता डाँकठब छेक, खा' सेहो होमियोपैथिक, खार्सेदिक किंरा भेठनबी नहि रबन् एम. री.री.एम. । झुदा नम्कण देखियोक । ओना मासु ग्रहो गप कहनहि जे ग्र पीने बहरौक उंपवान्ता गप्प एकौठा खडद नहि रँजेत खडि, जेना खान पीनहार सभक संग होगत छेक । मनुबखा ठीके खडि, झुदा येह जे एकठा गड़रँड ी छेक से रँडु भारी । खगना दिन नशा उंतबनाक रौद



पति-पनी दूनु गोठे नीचाँ खएनीह खा' मासुकेँ कहनहि, जे खायकि रौडिक रौद ओ' सभ पठना चनि जयतीह से हुनका सभक खातिब नहि झुदा खायकि खातिब तारत बहय दिय' । घौंघाँजक रौद से मोहनति भेष्टि जाय गेनहि । तकवा रौद हुनकब पनीक नजबि हमबासँ मिनन तँ ओ' कहनहि जे खहाँ तँ डुपब नहिये खायर' । खा' एहि रौब डुपब खयरौक खाग्रहो नहि कएनथि ।

किछु दिन रीतन खा' फेब मासुब जयरौक खरसब भेष्टन । किछु दिनमे पता चनन जे किबायादाब रौदनि गेन छथि । घबक नोक मात्र एतरेँ कहनथि जे खायकि पिताक मूँ भ' गेनहि खा' खनुकम्पाक खाधाब पब ओकब मायकेँ नोकबी भेष्टि गेनेक । खारँ ओ'सभ का पठनामे बहत छथि । घबक नोक खागाँ किछु नहि कहनहि, झुदा कनियाँक एकठा पितयोत भाय खायन बहथि, से कहनथि जे डाँकठबी विपोठमे रिष खा' कय खामेहलाक रणनि खडि । फेब खाँगा पति-पनीक मध्य मचन तुझनक चर्च भेन । कनियाँ कहगत बहथिन्ह जे ग्रा डाँकठब रँडु पिरेत छथि ताहि नेन नगड़ । होगत खडि, तँ डाँकठब



साहरँ कहथि जे नगड़ कि द्वारे पिरैत छी । खसु मूक
रौद हुनकब कनियाँक भार एहन मन छन जेना झुंजि भेँटि
गेन होय- एहि राँतमे सब क्य़ा एक मत बहथि ।

हेब दिन रिँतेत बहन था' रौदमे होन पब समाचाब
भेँटन जे थार्या सेहो थामे हला कए नेनक । हेब
रँहूत बाम राँत मोनमे घूमि गेन । थार्या भारुक छनि,
किछु रँशी तनारमे बहिँते छनि । गपकेँ गँभीबतासँ
नगत छनि । एकठाँ साबि बहथि, हुनकब राँत सेहो मोन
पड़न । एक गोँठ हारकक रिषयमे थार्या कहत छनि, जे
ओकब संगीकेँ होगत छैक जे ओ' हारक ओकवासँ प्रेम
करैत थछि । झुँदा थार्याक मत छन जे उँ' हारक
ओकवासँ नहि रबन् थार्यासँ प्रेम करैत छन । हम साबिकेँ
कहने बहियन्हि जे थार्या रँचा थछि, ओहिना हँसी कएने
होयत । झुँदा ओ' कहनन्हि, जे नहि यो । रँहुँ भारुक
थछि थार्या । कहत थछि जे ओहि हारकके प्रापु कबरौक
हेतु किछुओ कबत । एहि राँत पब हम तखन कोनो
रँशी ध्यान नहि देने बहियेक । झुँदा एहि राँतक थारँ



महत्तर रँढि गेन छन । हम होन दोरौवा नगेनहूँ ।
पता चनन जे ओ' हरक कोनो प्वान महाबानीक रँैठीक
रँैठी छी । ओकव माता शिक्षिका थछि, था' रँाप मेवीनमे
काज करैत थछि । सान-छह मास पव थरैत थछि ।
था' जखन थरैत छन तँ जे मास-पंद्रह दिन बहैत छन
से मावि-पीठिमे रिता दैत छन । पूवा मोहनलामे
रँदनामी छैक । मायक शीन-स्रत्तार रँद्ध नीक, रौनीसँ
हून-मरुत छैक । रँापकेँ तँ नोक चिन्हितो नहि
छैक । खानी मगड क थरौजे स्रनेत थछि नोक ।
थायकि संगीकेँ स्रून रँससँ उतवरा कान का तंग कएने
छन तँ ओ' हरक सभकेँ मावि-पीठि कय भगा देने छन,
था' एकव रँाद थार्या एहि शहबसँ दूब भ' गेन । ओ'
मायकेँ कहैत बहनि जे परीक्षा तक बहय दिय', झदा
माय रिझऊ भेनाक रँाद एको पन प्वान कर्द्ध-स्रुतिकेँ
देखय-नहि चाहैत छनथिन्ह । हम होन पव प्वछनियन्हि जे
ओहि हरकक रिराह थार्या मूँसँ पहिने कतय भेन । तँ
सास्रबक नोक थचंभित प्वछनन्हि, जे ओकव रिराह तँ भेन
झदा थहाँ कोना रँूमनहूँ । पता चनन जे सिनीग्रड ी-दिशि



कोनो कन्यागत छथि, खा' ओ' हारक खपन रौप जेकाँ
घब-जमाय रनि बहरौक नियाड़ कएने छथि । एहि शहबक
नोककेँ तँ बिराहक हकारो नहि भेठन । हम आयाकेँ
एकठा दूठ रौनिका रूमेत बही । झुदा ओकब 'किछुओ कइय
पड़त से कबर' केब अर्थ आरि जा' कय रूमनहूँ ।



5. पद्य (थाँगा)



नाम - ज्याति मा चौधरी ;जन्म तिथि -३० दिसम्बर १९१४;जन्म स्थान -रौलराव मधुवनी ;शिक्षा - स्वामी रिकेकानन्द मिडन स्कूल, शिक्षा साकची गर्भ हाडी स्कूल, मिसैज के एम पी एम गन्ठव कानेज, गन्दिवा गान्ही उपन यूनिवर्सिटी, थांग.सी.डरन्तू.ए.(काँस्ट्र एकाड्गन्ती) ;निरास स्थान - नन्दन,यू.के.;पिता -श्री शुभंकव मा,जमशेदपुर;माता -श्रीमती स्वधा मा शिरीपष्टी ;"मैथिली निखरौक थन्नास हम थपन दादी नानी भाग रहिन सरकै पत्र निखरौमे केने छी । रचपन सँ मैथिली सँ नगार बहन थन्ति।- ज्याति

हिमपात



रुर्ह ओढने रातारवण !
मानू खाकाशि ठूँठि क रिखवि गेन ,
अपने आप के छिवियाकह
सरके एक वंग मे वंगि गेन ॥

थवथवारैत सबदी स भयभीत
सर जीर अपन जगह धेनक;
प्रकृति के गहो अरबोध झुदा,
मनुष्य के नहि रँां धि सकन ॥

भाँति प्रकारक साधन जोगावनक
रिक्ठ पबिस्थिति पब रिजय नेन;
अपन सरश्रेष्ठ बुझिरन स
मनुष्य अंततः सहन भेन ॥



ख्यान करिता

90.नर-घवावी

साँप काँठन नन्दिनीकेँ,
नर घवावी नेनक खून ।
ठैनेक घवावी छोड़ू जूनि ।
अ रिशान जनसंख्या एतय,
छन रँनन एकठा कान,
अ नर-घवावी नेनक प्राण,
ठैनेक घवावी सारिकक डीह,
पबख अछि छोट खार की ।



खून नेनक खरिं ग्रा रनि गेन खखज,
नर घवारी होयत छोट किछ कान खनुव ।

91. रूह

द्वदय नग खछि जेरि,
से जखन बहय खानी,
मोन कोना बहत प्रसन्न ।
रूह सेहो कहि गेन छनाह ग्रा ।

झुंझुंगमे सूप मँगनहुँ,
पुछनक खहाँमे जैनी कैकठा छी ।
देत नहसुन की नहि बहय तापेर्य,
खापदकाने बहि गेन खछि खाग कान्हि सदिखन ।



सेन ठैकामे करैत छी भवि दिन काज,
तेँ प्राननशियेशन भेन खछि मवाठी,
एक्कागज तँ खछि केन्द्रीय सबकाव,
संपर्क राहवीसँ रेशी ।

छुतीसगढक छुतीस घंठाक यात्रा,
उत्तव-मध्य स्फेत्रक सुपकेँ देखन,
रँगान घूमन पंजारँ घूमन,
रँगानी कहनन्हि सुनि जे जेँ,
रँगानी जायत संग कबत कानूनी राँत।
सबदावजी कहनन्हि रोड पव,
रोड नागठ बहनो फ्रॉस कक,
सोनासँ खरैत छन एकठा सबदाव,
कहन कबत खरँ ग्रा मगड़ ।।
सकलना कहनक एक मैथिनकेँ,
मैथिन खछि मैथिनक पवम शत्रु ।
हम कहन सकलनाकेँ,हे



जुनि कक हुनका दूबि ।
काज सभठौ मठ कबाडु जुनि भडकाडु ।

रूहक भूमिसँ घुबि खासन छथि,
दिनीक सडक पब एहि रैब ।
पाठनिपत्र बहय बाजधानी,
हम छनहुँ ततय पुन फेब,
दिनी रैनन बाजधानी भावतक,
कोन जुन्नम हम कएन ।

कणाद कपिन गौतम जेमिनी
देतथि जौँ नहि काज,
कहनन्हि ङा ठीके हृदय नग,
जेरौ देने खडि सीरि ।
हृदय कोना प्रसन्न बहत जखन,
पेठ बहत गय खानी ।



जेरीमे पाग नहि बहत,
उपासे कवर ह्य भाग ।
रूह सेहो कहि गेनाह ग्वा ।

92. बिज

पाँचम रत्नसँ सातम रत्नमे,
तइपि गेन छनहुँ ह्य ।

छुठ्ठा रत्नक खनभर खछि बिज ।
राँ खाँ राँराँ जन्मक पहिनहि,
प्राप्त कएनहि मूँ,
राँअन्यक खनभर भेन बिज ।
माँ एके रहिनि छनि तेँ,
मौसी-मौसाक खनभरो नहि,
गहो बहन बिज ।
क्या कहत खछि जे छठामे पढत छी,
राँ खाँ राँराँक संग घुमेत छी,



मौसी-मौसाक काज उद्यममे जागत छी, तँ
हम कहैत छी, जे ग्रा कौन संरंध,
कौन रक्षा खछि, छोड़ि सकैत छी ।

उतब भेटैछ, खहाँ नहि रूमर ।
झदा नर संरंध, नर नगब,
नर भाषा, नरीन पीठ रिकै,
कौना रूमायर, ओ' कौना रूमत ।
ओ' तँ नहि रूमि सकत काका-काकी,
नहि रूमत दीया-राती,
खटैत दौड़त खा' नहि घुबि खाओत,
ककवा रूमायर खा' के रूमत ।



93. चित्रपतङ्ग

उड़ैत ग़ा ग़ुड्डी,
हमब मञ्जुकाङ्का जेकाँ,
नागन मंन्या रूकन शीसाक,
जेना प्रतियोगीक कागज-कनम ।
कठन चित्रपतङ्ग,
देखरैत खड्डि रासुरिकताक धवा ।
जतयसँ शुक ओतहि खमे,
झुदा रीच उड़ैत नक स्मृति,
उठैत कान स्रञ्जाक खाँ,
खसैत कान नबकक खनभूति ।



94. प्ररामी

संगहि काठन घास,
महीस संगे चङ्गनेहूँ,
पुछैत छी गद्दम गा,
पाकत कहिया ?
दू दिन दिन्नी गेनेहूँ,
सभठौ रिसबेनेहूँ,
गाहो रिसबि गेनेहूँ,
जे धान कठौगछ कहिया ।



95. र्देदपार्ठी

र्देद र्कक्य पवम सन्,
संस्कृत साहित् खति उतुम ।
करैत छी खर्ण रकतुर्य,
रुदा खर्ण की खर्णक प्वखा,
मवि गेनाह रिन् सुनने,र्देद र्कक्य,
रिन् पढने संस्कृत ।
यौ खर्ण नहि पढनेह् खर्ण,
खनका खनधिकार र्नेरौक चेष्टा,
कएनेह् खर्ण ।



छी रेदक थप्रेमी, नहि थछि म्मता,
रेदक पम्क की रिपम्कमे रँजराँक ।
रेद राक्य सए एकवा रँनेने छी,
थहाँ थकड़ ॥

96. रिसबनहुँ फेब

थूरँ ठेकनेने जागत,
जे नहि रिसबरँ थाग,
म्हदा गप्प पब गप्प चनन,
प्रविमता गेन ढहागत ।
फेब काजक रँब मोन,
नहि पड़न पड़त-पड़त मोन,
कर्णिक मूक छोट- छीन कप,
था तकवा रँद मसोसि कय
बहि जागत छी ग्म ।



97. तम्कशिना

तम्कशिना खच्छि पाकिस्तानमे,
गतिसासक उंनठरैत पन्ना,
चक्र घूमन ठूँठन हम्ब देशे,
खवाड्डी ठारु कएनक दियाद ।
झदा सोचेत छी ।
जे भने दियाद खच्छि समीप,
खा' कएने खच्छि खवाड्डी ,
ताहि रहल छी हम सजग,
करैत बहैत छी तैयाबी ।



1962 धवि हिमानयकेँ रूमन रैह,
जेना 1498 धवि छन समुद्र,
द्वार खोनेत छन खैरव दर्वा ।
पङ्क सीयो पव खाक्रमण होगत छन,
दूब-दूबसँ खरैत छन खलाचावी,
भने दियाद खछि कएने खबाङ्गि ,
जे करैत बहैत छी तैयावी ।

98. चोबि

गेनहुँ गाम खा' एम्हव,
खायन होन, समाचाव चोबिक ।
छुष्टी होयरना छन समाप्त,
झुदा चोबक गणना छन ठीक ।
खार्रयसँ एक्क दिन पहिने,
नगेनन्हि घात ।



तोड़ि कय केरौड़,
उंधेसन घब-रौब ।
नहि पारि कोनोठा चीज,
घुबन माथ पीठि ।
भोबमे पड़ सी कएनहि डायन सय,
पुनिस खायन हावि थाकि कय ।
पड़ सीसँ किनरौय दू ठाँ अतिबिऊ तान,
(पुनिस महबाज अपन घबक हेतु),
चाँडी नेनहि अपन कारिजमे ।
चोब हड़रैड़ ीमे छन चनि गेन,
झुदा एहि महशियक हाथ चाँडी गेन,
था' शो-केशिक चानीक नर्तकी ग्म भेन ।
चोबकेँ छन डब गेठक दवरौनक,
से छनाह ओ' गहनाक था' नकदीक तोकक ।
झुदा पुनिस महबाज दय बारि दौरि दवरौनहुँकेँ,
निकननाह चोबि कय रँवजोड़ सी ।



99. चोवकेँ सिखारह

यौ कका छी खहाँ खाँकेँ,
धोकड़ ी किएक रँनओने,
खोनि नेराड़ हेंब घोबिकेँ,
रँनाडुँ खाँ हेंब नरीने ।
कहनहि कका तखन जे हौ,
देखह खायत बातिमे जे चोब,
पठकत नाठी खाँ पब खाँ
चोँ नहि नागत मोब ।



पवञ्च काका जौँ ओ' चनरँय,
नाठी नीचाँ राँठे,
राह रँठा कहि दिहह चोवकेँ,
ओ गप तोही जा कय ।

100. कान्हि

भोरे उँठि आँहिम जागत छी,
था' साँम घुबि थाय सुतेत छी ।
कतेक बाम काज अछि छुँठैत,
अनठारैत अमकागत मोन मसोसित ।
जखन जागत छी चूँहीमे गाम,
आमेमंथनक भेँठैत अछि रिबाम ।
परैत छी हबे बाम उपबाग,
तखन रँनरँत छी एकठाँ प्राग्राम ।
कागजक पन्ना पव नर बाग,



रिनझुक रौदक द्ददयक संग्राम ।
चनेत छन रिना तावतम्यक,
रिना उद्धृक-रिधेयक ।
कनेक सोचि नेन,
छृष्टीमे जाय गाम ।
रिनझुक खड्दि नहि कोनो स्थान,
हृतिगव, साकार्मि भेनहुँ खग,
जे सोचन कएन, नित चनन,
जीरनक सब भेठन खरि जाय ।

101. मोन पाङ्गत

मोन खड्दि नहि पङ्गि बहन,
पाङ्गि बहन छी मोन ।

निखना कङ्गि कनमसँ निथेत,
हेव हाङ्गनठेन पेनक निरमे रौन्दि ताग,
छनहुँ निखागकेँ मोठरैत,



मासुब साहरँ भ' जागथ कनहृज ।

केनहुँ थपने थपकाव ठाढ़े-ठाढ़े,
थम्बर थखनो हमब नहि सुगढ़ ।

हेब मोन पाड़ित छी,
दिनमे रौखागत बही,
कनममे रौनी तकेत,
दोसब ठाढ़ि तोड़ने पड़ित छन,
रूबरक होयरक मंत्रा,
अहो छी नहि रूमैत,
मोजब होगत तँ खेतहुँ थाम,
अगिना मान ।

रौनीमे नहि कोनो थाम,
घूबमे होगछ मात्र काज ।
हेब छे पाड़ित,
अडीक रीया रीछरँ,
पेबाग कठराय खनैत छनहुँ तेन,
ओहिमे छनन तिनकोड़क स्वाद,



बाजधानीक शैफकेँ करैछ मात ।

तेनक कमीसँ भुक्कैत करैगक स्वाद,
'की नीक रैनन' केव मिथारान ।
महिनामे खाध किनो कक तेनक खर्च,
भ' जायत एक किनो, पागक माश्चर्ज ।
कंजूमी नहि, जरैवदस्तुी ठूसी ।
मोन पाड़त छी धानक खेत,मिन्नी कटौड़ ी,
नोढ़त काठन धानक मष्टा,
ओहि रीछन शीसक पागसँ कीनन नानछुड़ ी ।
'जकरे नाम नान छुड़ ी' खा' मतघबियाक खेन,
खामक जारूी, रशीसँ मारैत माछ,
खुबचनसँ मोहित खाम काँच ।
चूनक संग काँच खामक मीठ स्वाद,
रैडका दनान, दाँउन,
रौढा क पानि सँ डूरैन शीस होगत खखड़ ी,
धानमे मिना देना पव पकड़त छन फुङ्गुड़नी ।



भैबर स्थानक काँच रैबक स्वाद,
रिंदेसबक बरि दिनक रूमन,
हून_नोठकीसँ रिंदेसब पूजन ।
छूड़ १ नय जागत बही गामसँ,
दही-जिनेरी कीनि घुरैत भोजन कय ।

जमरौनीक रैनसुपावीक स्वाद,
पुबनाहाक धातवीमक गाछ ।
साहब दातमनिक सोम नोक छूड़,
जे खनेछ छी रूधियावी तकड़ ।

तिन्नी खेनागत रान,
गुन्नी उंठा, गौनीक खेन,
खखबाहाक नमेन ।
हूक्का नौनीक रूसक कनसुपती,
हेब कपड़ १क गेनी मठियातेनमे डुराय,



छनहुँ बहन जबाय ।
छठिक भोवमे फठक्का होइन,
जूझि शीतनक धुवखेन खेनेन ।
खायन रौढि दुर्भिक्ष,
छोड़न गाम यो मित्र ।
मोन नहि पड़ छु, छी पाड़ त,
रैसि रैसि रैसि ।

6. संस्कृत शिक्षा (थाँगा)

संस्कृत कथा

गंगातीरे एकः साधुः अस्ति । सः मज्जनः । सर्वदा परोपकारम्
करोति । दयान्वः अपि आसीत् । सः यः कोपि आगतः सहायम्
पृच्छतेत सः परोपकारम् करोति । एकः रानकः आगतः किमपि
पृच्छति । तस्य सहायम् करोति । एकदा सः साधुः स्नानार्थम् गंगा



नदी गच्छति । सः गंगा नद्याम् खरतवति । स्नानं करोति । तदा
श्रवाहे एकः रूश्चिकः आगच्छति । रूश्चिकस्य स्नानः दंशनम् ।
दुष्टं स्नानः । सः रूश्चिकः तत्र तस्य समीपम् आगच्छति । तदा
सः साधुः रूश्चिकः वस्त्रणीयः गतिं चिन्तयति । सः साधुं रूश्चिकं
गृह्णाति । सः रूश्चिकः रहरावं तस्य हस्तं दशति । एकरावं सः
वजति, पुनः दशति । पुनः गृह्णाति, पुनः दशति । तथापि सः
साधुः रूश्चिकं न वजति । सम्यक् गृह्णाति । अत्र तठम् आनयन्तुं
श्रयणं करोति । सः साधुः रूश्चिकं वजति । पुनः चिन्तयति—
एषः रूश्चिकः वस्त्रणीयः गतिः । सः रूश्चिकं पुनः गृह्णाति ।
सारधानं नदीतठम् आनयेति । तत्र एकः पुरुषः सर्पं पशुन्
भरति । साधुं किं करोति । गतिं पशुन् भरति । तदा सः
पुरुषः पृच्छति । भोः । किमर्थं रूश्चिकं वस्त्रति । सः दशति
किन । गतिः । तदा साधुः रदति । भोः । तस्य स्नानः
सः । दुष्टः स्नानः । मम स्नानः परोपकारः । मद्दः
जन्तुः सः यथा सः स्नानं न वजति तथा अहं मनुष्यः । मम
स्नानं कथं वजति । गतिं सः साधुः तम रदति । सज्जनस्य
स्नानः किदृशः भरति किन ।

कथायाः अर्थः ज्ञातः खलु । ज्ञातः ।

स्वभाषितम्



नाभिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते रणे ।

रिद्धमार्जित सञ्ज्ञस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता ।

रयं गदानी यत् स्वभाषितं श्रुतरंतः तस्य स्वभाषितस्य अर्थः
एरम् अस्ति । सिंहः रनवाजः गति प्रसिद्धः । किन्तु तस्य कोऽपि
अभिषेकं न करोतु । किमपि संस्कारं न ददाति । तथापि सः
रनवाजः । कथं सः स्वसामर्थ्येन एव स्व प्रयत्नेन एव रनस्य
आधिपत्यं प्राप्नोति । एरमेव सामर्थ्यान् प्रकषः स्वस्य प्रयत्नेन एव
अस्त्रं पदं प्राप्नुम शक्नोति ।

पद्य

(गजेन्द्र ठाकुर)

चर्चका

चर्चति नृति उद्भूयति आकाशे ।

वचयति नीडं चर्चका रक्षे आकाशे ।

नगवं ग्रामं स्फेदं भ्रमति चर्चका आकाशे ।

आहारं प्राप्नोति आगच्छति मायं दृष्टरा,

न कोनाहनं करोति गायति सा चर्चका ।



कनहः करोति न चठका तत्र मन्थ खाकाशे,
कनहः न करोति चठका च म्फेत्वे गृह मन्थ ।

नमोनमः ।
भरतां सरैषाम् अपि स्वागतम् ।
जनम् आरथकम् ।
काहली आरथकम् ।
मास्तु ।
चायम् आरथकम् ।
मास्तु । मास्तु । पर्याप्तः ।
किम् आरथकम् । जनम् आरथकम् ।
किंचित् आरथकम् ।
आम् ।



पुनः किंचित् खारशुकम् ।
धनम् खारशुकम् ।
चाकनेहः खारशुकः ।
मिथुनम् मधुवम् खारशुकम् ।
शिक्षणम् खारशुकम् ।
मासु ।
संस्कृतम् खारशुकं रा ।
खारशुकम् ।
ताडनं मासु ।
रम्भं धनं खारशुकम् ।
द्वेषः कौताहनः मासु ।
अहं भरतः हतकं ददामि ।
सर्वे रदंतु ।
चतुर्देदस्य हतकम् ।
भरान हतकम् ।
मम हतकम् ।
रदंतु ।
भरतः हतकम् ।
भरतः नामिका ।
समीचीनम् ।
सुनीते ।



भरति खागच्छतु ।
अहं भरवाः खाभूषणं रदामि ।
भरति मम् खाभूषणं रदतु ।
भरन्तुः स्वनीतायाः खाभूषणम् गति रदन्तु ।
भरवाः घण्टी ।
भरवाः केशीः ।
साधु-साधु ।
पुनः एकम् अश्यासः कर्मः ।
कः कस्य मित्रम् ।
अथरा का कस्याः सखी ।
गति भरन्तुः ।
नता प्रियङ्गायाः सखी ।
रदन्तु ।
उदाहरणं रदामि ।
गदानीम् भरन्तुः रदन्तु ।
बोहितः अन्विषेकस्य मित्रम् ।
उत्तमम् ।
गदानी रयं रहरचनस्य अश्यासं कर्मः ।
छात्रः - छात्राः ।
दंतकूर्चः - दंतकूर्चा ।



उत्तमम् ।

चशकः - चशकाः ।

रानकः - रानकाः ।

सनिकः - सनिकाः ।

रृष्कः - रृष्काः ।

शिञ्जरतिका- शिञ्जरतिकाः ।

पेठिका- पेठिकाः ।

उपेठिका- उपेठिकाः ।

नेखनी- नेखन्यः ।

खरुनी- खरुन्यः ।

घठी- घठाः ।

कूपी- कूप्यः ।

पर्णम्- पर्णानि ।

पुस्तकम्- पुस्तकानि ।

करुणम्- करुणानि ।

हनम्- हनानि ।

सङ्गकम्- सङ्गकानि ।

अहम् एकरचने रदामि । भ्रष्टः पविर्तुनं हरन् ।



छात्रः अस्ति- छात्राः सन्ति ।
छात्रा अस्ति । - छात्राः सन्ति ।
दंतकूर्चः अस्ति । - दंतकूर्चाः सन्ति ।
चमषः अस्ति । - चमषाः सन्ति ।
अङ्गुली अस्ति । अङ्गुल्यः सन्ति ।
पर्णम् अस्ति । पर्णानि सन्ति ।
वृक्षः अस्ति । - वृक्षाः सन्ति ।
रानकः अस्ति । - रानकाः सन्ति ।
गायकः अस्ति । - गायकाः सन्ति ।
लेखकः अस्ति । - लेखकाः सन्ति ।
रानिका अस्ति । रानिकाः सन्ति ।
पत्रिका अस्ति । पत्रिकाः सन्ति ।
पत्रम् अस्ति । पत्राणि सन्ति ।
पुष्पम् अस्ति । पुष्पाणि सन्ति ।
मन्दिवम् अस्ति । मन्दिवाणि सन्ति ।
हनम् अस्ति । हनानि सन्ति ।
पर्णम् अस्ति । पर्णानि सन्ति ।



अक्षरं लिखति । अक्षरं लिखति ।
लेखनी लिखति । लेखनी लिखति ।

अक्षरं लिखति । अक्षरं लिखति ।

लेखनी लिखति । लेखनी लिखति ।

लेखनी लिखति । लेखनी लिखति ।

लेखनी लिखति । लेखनी लिखति । तस्य लेखनी लिखति ।

लेखनी लिखति । लेखनी लिखति ।

लेखनी लिखति । लेखनी लिखति ।

लेखनी लिखति । लेखनी लिखति ।

लेखनी लिखति । लेखनी लिखति ।

लेखनी लिखति । लेखनी लिखति ।

लेखनी लिखति । लेखनी लिखति ।

लेखनी लिखति । लेखनी लिखति ।

लेखनी लिखति । लेखनी लिखति ।

लेखनी लिखति । लेखनी लिखति ।

लेखनी लिखति । लेखनी लिखति ।

लेखनी लिखति । लेखनी लिखति ।



ते प्रकषाः । ते के ।
ते प्रकषाः ।
के प्रकषाः । ते प्रकषाः ।
हस्तं दर्शयन्तु ।
श्रमता उन्तिष्ठन्तु । ताः रानिकाः । सा रानिका ।
सा पेठिका । ताः पेठिकाः ।
सा का । ताः काः ।
का पेठिका । सा पेठिका ।
काः पेठिका । ताः पेठिकाः ।
तत् चित्रम् । तापि चित्रापि ।
तत् किम् । तापि कानि ।
ते वृक्षाः । एते वृक्षाः ।
एते छात्राः । ताः घण्टाः ।
ते के । एते के । एताः रानिकाः ।
एताः घण्टाः । ताः रानिकाः ।
एताः काः । ताः घण्टाः ।
काः घण्टाः । तानि फनानि ।
एतानि फनानि । एतानि प्रसुकानि ।
तानि प्रसुकापि । एतानि फनानि ।
एतानि कानि । तानि फनानि ।



भरान् रानकः । भरन्तुः रानकाः ।
भरती रानिका । भरन्तः रानिकाः ।
अहं भावतीया । रयं के ।
रयं भावतीयाः । रयं भावतीयाः ।
अहं देशेभक्तः ।
रयं देशेभजाः ।
भरन्तुः रानकाः ।
भरन्तुः के ।
रयं रानकाः ।
भरन्तः रानिकाः ।
भरन्तः काः ।
रयं रानिकाः ।
अहम् एकरचनं रदामि ।
भरन्तुः रहरचनं रदन्तु ।
एकम् अग्र्यासः कूर्मः ।
अहं भावतीयः । अहं बाह्द्रेभजाः ।
अहं चतुवः । अहं मूर्थाः ।
रयं मूर्थाः ।

सिंहिवस्तु ।



7. मिथिला कना- चित्रकना

(खाँगा)

मधुश्रीरणी खविपन



चित्रकाव- उमेशी ह्रमाव महतो, गाम-
रँहाद्वर्गज(जिना किशिनर्गज,रिहाव, भावत), उम्र-18 ररष, पितक
नाम- श्री केशर महतो ।

श्रीरन प्ररु पंचमी (नाग पंचमीसँ) प्रावम्रु भ' कय श्रीरन शुकन
तृतीया पर्यन्त नीचाँक खविपन पव रिभिन्न नागक पूजा कएन
जागत खछि, खाँ रृह्या लोकनि एहि खरसव पव कथा सेहो कहत
छथि ।

नर रव-रधूकेँ संग रैसा कय पूजाक समापन होगत खछि ।
गग खविपन दृष्टा मेना-पात खाँ पूजा कवयरीनीक दूनू दिशि
भूमि पव रँनागत जागत खछि । राम पात पव 101 सर्पिणी



सिनूव खां काजबसँ खां दहिन कातक पात पब 101 सर्पिणी
पिठावसँ रँनाउन जागत खछि । राम कातक सर्पक झुथिया
रुसुमारती खां दहिन कातक रौबस नागक पूजा होगत खछि ।
मेना पातमे सर्प रशीकवण शिकित्त होगत खछि । संगमे सूर्य
चन्द्र गौब, साठि खां नरग्रहक चित्र सेहो निखन जागत खछि ।





8. संगीत शिक्षा

शुद्ध स्वर तখন होगत छ्ति, जखन सातो स्वर अपन निश्चित स्थान पव बहत छ्ति । एहि सातो पव कोनो चेन्ह नहि होगत छ्ति ।

जखन शुद्ध स्वर अपन स्थानसँ नीचाँ बहत छ्ति तँ कोमन कहन जागत छ्ति, खां ङा चाबिठा होगत छ्ति एहिमे नीचाँ स्फतिज चेन्ह देन जागत छ्ति, यथा- रे॒, ग॒, ध॒, नि॒ ।

शुद्ध खां मध्यम स्वर जखन अपन स्थानसँ ऊपव जागत छ्ति, तखन ङा तीव्र स्वर कहागत छ्ति, एहिमे ऊपव उँध्रिब चेन्ह देन जागत छ्ति । ङा एकेठा छ्ति- मं ।



एरम प्रकारे सात ठा शृङ्ख यथा- सा,रे,ग, म, प, ध, नि, चाबिठा
शृङ्ख यथा- रे,ग,ध,नि, था' एकठा तीब्र यथा मं सभ मिना
कय १२ ठा सुब भेन ।

एहिमे स्पष्ट् थुछि जे सा था' प थचन थुछि, शेष चन किंरा
रिपुत ।

थारि ह्येव कीरौडि पव थुडु । 37 ठा की रना कीरौडि हम एहि
हेतु कहने चानहुँ,किएक तँ 12, 12, 12 केव तीन सेठ था,
थुतिम 37म तीब्र साँ केव हेतु ।

सपुनक मे सातठा शृङ्ख था' पाँचठा रिपुत मिना कय 12 ठा भेन !

राम कातसँ 12 ठा उजवा था' कावी की मंद सपुनक, रीच रना 12
ठा की मध्य सपुनक था, 25 सँ 36 धवि की ताव सपुनक कहन
जागत थुछि ।

थारोह- नीचाँ सँ डुपव गेनाग, जेना मंद सपुनकसँ मध्य सपुनक था'
मध्य सपुनकसँ ताव सपुनक ।



मंद सप्तकमे नीचाँ रिन्दु, मध्य सप्तक सामान्य था ताव सप्तकमे
डुपव रिन्दु देन जागत थछि, यथा-

सं, वं, गं, मं, पं, धं, नं सा, रे, ग, म, प, ध, नी
सां, रें, गं, मं, पं, धं, निं

खरबोह- तावसँ मध्य था मध्यसँ मंद केँ खरबोह कहन जागत
थछि ।

रादी स्वर- जाहि स्वरक सभसँ रेशी प्रयोग बागमे होगत
थछि ।

समरादी स्वर- जकव प्रयोग रादीक राँद सभसँ रेशी होगत
थछि ।

खनुरादी स्वर- रादी था समरादी स्वरक राँद शेष स्वर ।

रज्ज स्वर- जाहि स्वरक प्रयोग कोनो विशेष बागमे नहि होगत
थछि ।

पकड़- जाहि स्वरक सङ्गदायसँ कोनो बाग विशेषकेँ चिन्हत छी ।

(खनुरतते)



9. रौनारुा ढुते

बाजा सनहेस

बाजा सनहेस सुन्दर खा' रीब छुनाह । मोवंग नेपानमे बहैत छुनाह । ओ' दुसाध जातिक छुनाह खा' दरुना नामक मोवंग बाजाक मानिन सनहेससँ प्रेम करैत छुनि । बाजाक रैद्य ओकवासँ प्रेम



करैत छुनाह खा' दरनाक खस्रीप्रतिसँ ओ' खामेहला कए नेनन्हि ।
सनहेस छुनाह मोवंगक तान्त्रकदाव नौवंगी रँहादुव थापाक
सिपाही । सनेहस छुनाह मोनक बाजा । सभकेँ रिपत्रिमे
सहायता दैत बहथि । ताहि द्वारा दरना दिशि हुनकब कोनो ध्यान
नहीं छुनन्हि । सभ हुनका बाजा कहैत छुनन्हि, से ओ'
तान्त्रकदावकेँ पसिन्न नहीं पड़न । एक दिन दवरौबमे ओ' सनेहसकेँ
पुछनक- खहाँक नाम की ? सनेहस कहनन्हि- हमब नाम छी
बाजा सनेहस । तखन थापा कहनकन्हि, जे खहाँ खपन नाममे
बाजा नहीं नगाडु । सनेहस कहन्हि, जे ओ' पदरी छी, जन द्वारा
देन पदरी । कोना छोड़रँ एकबा । हमबा चोड़ि यो देरँ लोक
तँ कहरेँ कबत । तखन थापा कहनकन्हि जे लोककेँ मना क'
दियोक । सनेहस कहनन्हि जे लोककेँ कोना मना कबरैक ।
लोकक मोन जे ओ' ककवा की रँजाओत । निकनि गेनाह सनेहस
ओतयसँ । खारँ नहि निमहत ओ' लोकबी । खाग कहैत खछि नाम
छोड़य नेन, कान्हि किछु खाब कहत । पितियोत रँहिन बहैत
छुनन्हि अंगेबमे । रँहिनोग बाज दवभंगक लोकबीमे छुनाह ।
एहब असमी दरनाकेँ कहि देनक जे सनेहस जा' बहन खछि
मोवंग छोड़ि कय । दरना छुनि कमक-कमथासँ तंत्र-मंत्र
सिखने । कहनक ओ' सनेहसकेँ जे हम बाजाक दवरौबमे सात
सय सिपाहीक सबदाव चूहड़मनकेँ हठरौ क' खहाँकेँ सबदाव रँना
देरँ । सैह भेन । रँडका जनसा देनक दरना, गेनक गीत-



বৌ স্ববহা,
ৰাঁবহ ৰঁবম তোবা নেন খাঁচব ৰঁহনৌঁ।

ঋদা, কেনক চোবি চূহুঁমন, চোৰেনক নৌ নাখক বানীক হাব খা
ন্বকা দেনক সনহেসক ওঁচৈনমে। বাজাকৈঁ কহনক চূহুঁমন জে
সনহেসক ঘবক তনাসী নেন জায। সনহেসক গেকখাক খোনসঁ
খসন হাব।

দৰঁনা কানী মন্দিবমে তঁত্র সাধনা শ্বক কএনক। ভূত-প্ৰেতকৈঁ
নোতনক। খুন ৰৌকবৰৈনক চূহুঁমনসঁ।

চূহুঁমন সন্তা ৰঁকি দেনক।

সনহেসকৈঁ জেনসঁ ছোঁজি দেন গেন খা ওকব ওহদা ৰঁহ ৷ দেন
গেন। চূহুঁমনকৈঁ ভেনেক জেন।

দৰঁনা খা সনহেস ৰিরাহ কএ খুঁশীসঁ বহয নগনাহ।

10. পঁজী প্ৰঁধ

শ্ৰী ৰিঘ্যানন্দ না পঞীকাব 'মোহনজী' পল্ডুখা, ততেন, ককৰৌড়(মধুৰঁনী), বশাৰ্হয(পূৰ্ণিয়া), শিৱনগব
(খববিয়া) খা সমপ্ৰতি পূৰ্ণিয়া। পিতা নহুঁ ধৌত পঞ্জীশাস্ত্ৰ মার্ভল্ড পঞ্জীকাব মোদানন্দ না, শিৱনগব,
খববিয়া, পূৰ্ণিয়া



पुनश्च सप्तसिन्धु सँ प्राच्यान्निह्नीया यायारव ऋषि लोकनि गंगा उ' हिमानयक मध्याक स्वभूमि मिथिनामे जाहि आर्यसंस्कृतिक रीज-रपन कएन, तकव मून छन धर्म, धर्मक मून थिक जाति, आ जाति होयत एहि जन्मक रिशुहिसँ, जन्मसँ रिशुह संतान होगत अछि तखन जखन रिराहक अधिकार जाहि कन्यासँ हो तकवहिसँ रिराह कएना उतुव प्राप्पु संतान आर्य जातिक रिराहक नियम सब सरप्रथम निर्र्धित भेन रिभिन्न स्यूति सभमे । महान स्यूतिकार मनु उ' यात्रुरकेक खनुसाव ओहि कन्यासँ रिराहक अधिकार हो जे-

1. समान गौत्रक नहि होथि,
2. समान प्ररवक नहि होथि,
3. मागक सपिन्द नहि होथि,
4. पितक सपिन्द नहि होथि,
5. पिताम अथरा मातामहक संतान नहि होथि,
6. कठमामक संतान नहि होथि ।



एहि रैराहिक अधिकावक निष्पादनार्थ कमसँ कम मन्त्र ओ' यात्रुरन्त्येक समयसँ त निश्चये लोक अपन ' यारतो पविचय' स्वर्य अपनहि बखेत आरि बहन छन, झुदा पश्चातक ह्यगमे ओ प्ररुति समाप्तुप्राय भ' गेन । रिराहक हेतु रव ओ' कग्याक सम्पूर्ण पविचय तँ आरथके छन, जे आनह् धार्मिक संस्कावक हेतु सपिन्दुत्रक रिचाव रिराहक अतिविङ्ग श्राद्ध ओ' अशौच प्रभ्रुतिखह्मे आरथक होगत छन, एहि कावणै प्रागैतिहासिक कानहिसँ लोक अपन सांगोपांग पविचय बखेत छन । ओ' ओकबहि अन्वसाव अपन धार्मिक क्रियाक निष्पादन करैत बहए । ओ नियम सभ हमवा लोकनिक प्राचीनतम धर्मग्रंथ सभमे उपनह् अछि । स्मृति सभमे कहन गेन अछि, जे जनिकामँ रिराहक अधिकाव नहि हो से स्रजना भेनीह । स्रजनासँ रिराहोपवांत प्राप्त मंतान चाल्दान रूमन जागत छन । ओ' आर्यत्रक मयादासँ रैहिस्रुत मानन जागत छन ।

(अन्वरतते)

11. मिथिना आ' संस्कृत



कामेश्वरसिंह दवभङ्गा संस्कृत विश्वरिद्यालय द्वारा त्रैमासिकी संस्कृत पत्रिका ' विश्वमनीषा' निकलेत छन । 1975 ङ. सँ 1994 ङ. धरि ङ पत्रिका प्रकाशित होगत बहन, ऋदा 14 ररषसँ एकव प्रकाशिन रँद ँछि ।

हिन्दीमे मिथिनाक गतिहासक ँतिरिङ्ग सात खल्लमे मैथिनीक पवम्पवागत नाँकक (1300 ङ. सँ 1900ङ. धरिक 16 ठाँ नाँक)प्रकाशिन कएन गेन छन । मैथिनीमे पं गोरिनद ना निखित रातारवण नाँकक संस्कृत ँनुराद श्री पं शशिनाथ ना कएनहि ँा तकवा विश्वरिद्यालय प्रकाशित कएनक । ' स्मृति-साहस्री' जे 20म शताब्दीक रिद्वान्-साधकक जीरन पव ँधावित प्रथम मैथिनी महाकार्य ँछि, ँा जकव बचयिता श्री रूँधिधावी सिंह'वमाकव' छथि केव प्रकाशिन सेहो विश्वरिद्यालय कएने ँछि । कपक समूचयः नामक पुस्तकमे चावि गोँठ कपक ँछि । एहि मे चाविम संस्कृत कपक म.म.खमरेश्वर प्तत धूर्तरिडम्बन प्रहसनम् मैथिनी ँनुरादक संदेन गेन ँछि । म.म. भरनाथ उपाध्यायक बाजनीतिसावः सेहो मैथिनी ँनुरादक संग देन गेन ँछि ।



संप्रति विश्वेतिहासकार कार्य मानमे एकरैव पंचाङ्ग रनेरा धवि
सीमित रूमागत खड्डि ।

12. भाषा खा प्रीद्यागिकी

देरनागरी निखरामे रैवाह खाग.एम.ङा. केव योगदान रिशिष्ट
खड्डि । एहिमे संस्कृतक उदात्त , खनुदात्त खा सुवित केव संगे
रिकावी, देरनागरी खंक खा संगीतक नोष्टेशन निखरक सुरिधा
खड्डि । रिदेहक संगीत शिक्षा सुंभ रिना एकव सहयोगक संभर
नहि छन । मंद सप्तक, तीव्र खा कोमन सुवक नोष्टेशन एहिमे
खड्डि । ऋ,ऋ खा लृ,लृ खा एँ, ऐ ख, ~ हननुक रौद खखव
जोडरक सुरिधा एहिमे सुरिधा छेक । खनुदात्त क॒ उदात्त क॑
खा सुवित क॑ सेहो उपनछ्ख खड्डि ।

ङा रिस्टामे सेहो कार्य करैत खड्डि । खा यूनिकोड हंां ण्टमे
बहरक कावण णंठबनेठ पव पठनीय खड्डि । रिदेहक समुख पृष्ठ
पव देरनागरीसँ संरिधित तीनठा निंक बाखन गेन खड्डि । पहिन दू
ठा निंक पव जानकावीक संग सांखठरेयव डाँनोडक निंक
खड्डि । तेसव निंक पव आँननागन तागपिगक सुरिधा खड्डि, एतय



ठागप क' कय काँपी कय रड डोक्युमेंठमे पेस्ट कए सकैत छी किंरा ग्रामेनमे सोमे ठागप केनाक रँदना एतयसँ काँपी कय पेस्ट कए सकैत छी ।

(खबरतते)

13. बचना निखरौसँ पहिने...

मेथिनी खकादमी, पठना द्वावा निधारित मेथिनी लेखन-शैली

1. जे शैल मेथिनी-साहित्यक प्राचीन कानसँ खाग धरि जाहि रतनीमे प्रचलित छुट्टि, से सामान्यतः ताहि रतनीमे निखन जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह

खग्राह

एखन

खखन, खखनि, एखेन, खखनी

ठाम

ठिमा, ठिना, ठमा

जकब, तकब

जेकब,



तेकब

तनिकब

तिनकब । (रैकम्पिक कर्पे ग्राह)

खुछि

ईछु,

खहि, ए ।

2. निम्नलिखित तीन प्रकारक कप रैकम्पिकतया खपनाउन जाय:
भ गेन, भय गेन रा भए गेन ।
जा बहन खुछि, जाय बहन खुछि, जाए बहन खुछि ।
कब' गेनाह, रा कबय गेनाह रा कबए गेनाह ।
3. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' निखन जाय सकैत
खुछि यथा कहनि रा कहन्हि ।
4. 'ए' तथा 'उ' ततय निखन जाय जत' स्पर्शतः 'खग' तथा
'खुँ' सदृशे उच्चारण ग्ग हो । यथा- देखेत, छुनैक,
रौखा, छोक गवादि ।
5. मैथिलीक निम्नलिखित शिद्ध एहि कपे प्रयुक्त होयतः
जैह,सैह,गएह,उएह,जैह तथा दैह ।



6. एदस्र गकावांत शिद्धमे 'अ' के लुप्त कवरँ सामान्यतः अग्राह्य थिक । यथा- ग्राह्य देखि आरँह, मानिनि गेनि (मन्त्रमात्रमे) ।
7. स्वतंत्र दस्र 'अ' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकल्पिक रूपेँ 'अ' रा 'य' निखन जाय । यथा:- कयन रा कएन, अएनाह रा अयनाह, जाए रा जाय गलादि ।
8. उच्चारणमे दू स्वरक रीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आरँ जागत अछि तकरा लेखमे स्थान रैकल्पिक रूपेँ देन जाय । यथा- धीआ, अहँआ, रिआह, कौआ रा धीया, अहँया, रिआह ।
9. सान्प्रनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभर 'अ' निखन जाय रा सान्प्रनासिक स्वर । यथा:- मैअण, कनिअण, किवतनिअण रा मैआँ, किनिआँ, किवतनिआँ ।
10. कावकक रिभक्तिरक निम्नलिखित रूप ग्राह्य:-
हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे ।
'मे' मे अन्वय सरँथा लज्य थिक । 'क' क रैकल्पिक रूप



‘केव’ बाखन जा सकैत छि ।

11. पूरकानिक फियापदक रौद ‘कय’ रा ‘कए’ खर्याय रैकल्पिक कर्पे नगाउन जा सकैत छि । यथा:- देखि कय रा देखि कय ।
12. माँग, भाँग खादिक स्थानमे माँ, भाँ गलादि निखन जाय ।
13. खर्ह ‘न’ ओ खर्ह ‘म’ क रँदना खन्साव नहि निखन जाय, किंतु छापक स्वरिधार्य खर्ह ‘ँ’, ‘ँ’, तथा ‘ँ’ क रँदना खन्सारो निखन जा सकैत छि । यथा:- खर्ह, रा खर्क, खर्हन रा खर्चन, कल्द रा कर्ठ ।
14. हनंत चिह्न नियमतः नगाउन जाय, किंतु रिभञ्जिक संग खकावांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।
15. सभ एकन कावक चिह्न शिद्धमे सँ क निखन जाय, हँ क नहि सँहाञ्ज रिभञ्जिक हेतु हँवाक निखन जाय, यथा घब पबक ।



16. खन्ननासिककेँ चन्द्ररिन्दू द्वारा र्गञ्ज कयन जाय । पबंतु
झदणक स्वरिधार्थ हि समान जठिन मात्रा पब खन्नस्राबक प्रयोग
चन्द्ररिन्दूक रँदना कयन जा सकैत छि ।

17. पूर्ण रिबाम पासिसँ (।) सूचित कयन जाय ।

18. समस्त पद सठा क' निखन जाय, रा हागफेनसँ जोडि क' ,
हठा क' नहि ।

19. निख तथा दिख शिद्धमे रिंकावी (२) नहि नगाउन जाय ।

(ह./ गोरिन्दू ना/11.08.76 श्रीकांत ठाकुर 11.08.76 स्वरेन्द
ना 'स्वमन' 11.08.76

(खन्नरतते)

14. प्ररामी मैथिन English मे

King Videha of Mthila had his counselor
Mahosadha. Mthila was invaded by Sudhanvan,



king of Sankaiya, and much later by Chulani Brahmadatta and Kewatta, king of Kampila both were defeated by Siradhvaj and Videha, respectively. Jataka story of king Videha and Mahosadha, commander. Secret service reported daily, employed a hundred and one soldiers in as many cities, employed parrots also, great rampart, watchtowers, and between the watchtowers, three moats, water, mud and a dry moat. In city old houses were restored and large banks were dug made water-reservoirs and grain store-houses. The siege of Mthila and the great tunnel have been described in the Jataka. The weapons included, red-hot missiles, javelins, arrows, spears and lances, and showers of mud and stone. The society consisted of Brahmanas, Kshatriyas, Vaisyas. Sirivaddha, father of Mahosadha was an important merchant of Mthila. The Chandala is also referred. A hawk carried



off a piece of flesh from the slab of a slaughter-house. A dog fed upon the bones, skins of the royal kitchen. There was a type of education and later Videha students went to Takshsila for education, e.g. Pint gut tara. Kahoda Kaushitaki was married to the daughter of his teacher Uddalaka Aruni. Suka visited Mthila to acquire wisdom Srutadeva was a great scholar of pre-Bharata era. Agriculture and Cattle-rearing was in vogue and Yajur-Veda mentions famous cows of Videha. King Vedeha gave a thousand cows and a bull to Mahasodha. There was a place where foreign merchants showed their goods. Goods from Magadha and Kasi were imported. The conches of Magadha, Kasi-robe and Sindh mares were famous. Krishna visited Mthila to see his devotees Srutadeva and Bahulashva. The Mahabharata says that shaligramā is another name of Vishnu, Shaligramā worship



begun. Janakpur had four gates were four market towns distinguished as eastern, southern, western and northern. There was a revival of Mithila after Bharata war which lasted for more than two centuries and in this period the famous sages of the Brahmanas, the Aranyakas and the Upanishads flourished. Vaisali lost its significance. After Bharata War period the Puranas furnish genealogies of Pauravas(Hastinapur-Kosambi), the Ikshvakus (Kosala) and the Bahadrathas (Magadha).The names of the kings of Videha is available in the Jatakas.The Upanishads mention one ruler known as Janaka Videha.Videha has been omitted in the sixteen Mahajanapada available in the Buddhist work Aiguttara-Nikaya where we have Vajji.Karala Janaka perished along with his kingdom and relations. Kasi was conquered by Kosala and Anga by Magadha. The Vajji established



their republic before the Kosala conquest of Kasi and the Magadh conquest of Anga. Mall, the penultimate sovereign of the Janaka dynasty of Videha, adopted the faith of the Jaina Parsva, the first historical Jaina 250 years before Mahavira(561BC-490BC). Between Bharat war circa.950 BC and Karala Janaka circa 725 B.c Videha monarchy flourished.

Suruchi group consisting of Suruchi I, Suruchi II Suruchi III and Mahapadmanada.

Janaka group consisting of Mahajanaka I, Arittajanaka, Polajahak, Mahajanaka II and Di ghavu. Then a group of two kings Sadhina and Narada and then Nimi and Karala(father and son). Makhadeva is regarded as the founder of Mthila monarchy.

Angatis was righteous king, had a daughter named Raja. His ministers were Vijaya,



Sunama and Alata. Narada set him to right path after the influence he got from the heretical teachings of a naked Guna Kassapa. Purana Kassapa and Maskari Gosala were the contemporaries of Buddha, thus, Guna Kassapa flourished round 6th century B.C. Chulani Brahmadatta of Kampilya conquered 101 princes of India and only Videha had been left. There is reference that Gandhara king and the Videha king met and mystic meditation was taught to Videha King by Gandhara king. There were land owners and Alaras is mentioned in this regard. The Vedic texts mention Uddalaka and Svetaketu as belonging to the age of Janaka of Videha. The Jatakas mention these two scholars connected with Banaras. For MahapanadaVisvakarman, engineer, constructed a palace seven storeys high with precious stones. Mahajanaka II was brought up by his mother in the house of a



Brahmana teacher at Kalachampa and after finishing his education at 16 sailed for Suvarnabhumi on a commercial enterprise, in order to get money to recover the kingdom of Videha. The ship perished in the middle of the ocean. He managed to reach Mithila, where the throne had been lying vacant since the death of Polajanaka, his uncle, who had left a marriageable daughter Sivalidevi and no son. Mahajanaka II was now married to this princess and raised to the throne. He later renounced the world. A remarkable feature of the character of Mahajanaka II was his spirit of renunciation. He gives utterance to a famous verse : 'We have nothing own may live without a care Mithila palaces may burn, nothing mine is burned . Mahajanaka-Jataka is sculptured on a railing of the Bharhut Stupa having inscription : The



arrowmaker, King Janaka, Queen Sivali. Ni mi and Kal ara are ment ioned in Buddhi st ,Brahmani cal and Jai na l i t e r a t u r e . Ugrasena Janaka rev ived the great ness of M t h i l a . Asht avakra sa is as all other moun t ai ns are inferior to the Mai naka, as calves are inferior to the ox, so kings of the earth inferior to the king of M t h i l a (Ugrasena). He is called Janakana varishta Samrat (Mahabharata), great performer of sacrifices and is compared with Yayati. In one such Yagya Asht avakra, son of Kahoda and Sujata (daughter of Uddalaka), attended and Asht avakra defeated Vandin, son of a charioteer and got released his son. Paurava prince, Satanika, the son of Janamejaya, was a Vai dehi . Sat hni ka married the daughter of Ugrasena Janaka who sought to enhance his influence by means of this matrimonial alliance. Devarata II was contempor ary of Yajnaval kya, who took the management of the



royal sacrifice where a quarrel arose between Yajnaval kya and his maternal uncle Vai sampayana as to who should be allowed to take the sacrificial fee and in presence of Deval a, Devar at a, Sumant a, Pai l a and Jai mi ni Yaj naval kya took half of that. Devar at a l obt ai ned the famous bow of Si va. The Vedic texts mention five Vi deha ki ngs,Vi deg ha Mat hava, Janaka Vai deha, Janaki Ayast huna, Nami Sepya and Para Ahl ara. Janak Ayast huna in the Bri hadar anyaka Upani shad is said to be pupi l of Chuda Bhagavi tti and a teacher of Sat yakama Jabal a. Sat yakama Jabal a is cont empor ar y of Janaka Vai deha and Yaj naval kya. Ayast huna was a Gri hapat i of those whose Adhvar yu was Saul vayana and taught the l atter the proper mode of using cert ain spoons. Sayana Ayast huna is the name of a Ri shi. Jatak mentions a city named Thuna bet ween M th i l a and the



Hi mā l aya s, a f a v o u r i t e r e s o r t o f Ayast huna. Janakpur c o r r e s p o n d s e x a c t l y w i t h t h e p o s i t i o n a s s i g n e d b y H i u e n T s a n g t h e c a p i t a l o f V a j i . J a n a k a V a i d e h a i s K r i t i J a n a k a, s o n o f B a h u l a s v a a n d w a s c o n t e m p o r a r y o f J a n a m e j a y a P a r i k s h i t a a n d h i s s o n S a t a n i k a . Y a j n a v a l k y a a n d K r i t i s w e r e t h e d i s c i p l e s o f H i r a n y a n a b h a K a u s a l y a . U d d a l a k a A r u n i w a s a p p r o a c h e d b y J a n a m e j a y a P a r i k s h i t a t o b e c o m e h i s p r i e s t . U t t a n k a i n s t i g a t e d J a n a m e j a y a t o e x t e r - m i n a t e t h e n o n - A r y a n S a r p a s b y b u r n i n g t h e m i n a s a c r i f i c e . U d d a l a k a A r u n i w i t h h i s s o n S v e t a k e t u a t t e n d e d t h e S a r p a s a t r a o f J a n a m e j a y a . Y a j n a v a l k y a t a u g h t t h e V e d a s t o S a t a n i k a, t h e s o n a n d s u c c e s s o r o f J a n a m e j a y a . K r i t i , t h e d i s c i p l e o f H i r a n y a n a b h a, w a s t h e s o n o f a k i n g . J a n a k a V i d e h a w a s a c o n t e m p o r a r y o f U d d a l a k a A r u n i , Y a j n a v a l k y a, U s h a s t i C h a k r a y a n a . J a n a k a V a i d e h a b r o u g h t c e n t r e o f



political and intellectual gravity from the Kuru country to Videha. The royal seat of the main branch of the Kuru or Bharata dynasty shifted to Kausambi. Aitareya Brahman says that all kings of the are called Samrat. Satapatha Brahman says that the Samrat was a higher authority than a Rajan as by the Rajasuya he becomes Raja and by Vajapeya he becomes Samrat.

The Kuru Panchalas were called Rajan. Janaka Videha's was a master of Agni hotra sacrifice. Yajnavalkya learnt the Agni hotra from this king. Yajnavalkya Vajasaneya, who was a pupil of Uddalaka Aruni.

मिथिलबुद्ध